	विश्व के साथ सम्यक् सम्बन्ध
…we are the world, the world is you and me, the world is not separate from you and me. We have created this world, the world of violence, the world of wars, the world of religious divisions, sex, anxieties, the utter lack of communication with each other, without any sense of compassion, consideration for another. So wherever one goes, whether in India, the Middle East, or come to this country, in essence right through the world human beings, that is you and another living in India, in America, in Europe or in the extreme Orient, we suffer, we are anxious, we are uncertain, we don't know what is going to happen. Everything has become uncertain.	यह दुनिया हम ही हैं। मैं और आप इस दुनिया से भिन्न नहीं है; यह दुनिया मुझसे और आपसे भिन्न नहीं हैं। हमने ही इस दुनिया का निर्माण किया है – हिंसा, युद्धों और धार्मिक विभाजनों की दुनिया; यौन, चिन्ताओं और पारस्परिक संवादहीनता की दुनिया; दूसरे के प्रति करुणा और विचारशीलता की भावना से रहित दुनिया। विश्व भर में किसी भी देश में कहीं भी जाने पर लोग, अर्थात् आप और अन्य सभी, संतप्त दिखाई पड़ते हैं; हम चिंतित हैं, अनिश्चित हैं और नहीं जानते कि क्या होने वाला हैं। सभी कुछ अनिश्चित हो गया हैं।
So there is a common relationship between us all, whether we live in a cold climate, or hot climate, or very far away or very near, it is our human problem, therefore we are the world essentially, basically, fundamentally, and the world is you, and you are the world. I do not know if one really realizes that, not intellectually but deeply, basically, that right through the world as human beings we are in sorrow, fear, anxiety, violence, uncertain of everything, insecure. So unless one realizes that the world is you, and you are the world, fundamentally, deeply, not romantically, not intellectually but actually, because then our problem is the global problem, not my problem or your particular problem, it is a human problem. Can we go on from there?	दुनिया भर में मनुष्यों के रूप में हम दुखी हैं, भयभीत हैं, चिंतित हैं, हिंसायुक्त हैं, प्रायः सभी विषयों में अनिश्चित हैं और असुरक्षित अनुभव करते हैं। हम सबके मध्य एक साझा सम्बन्ध हैं। वस्तुतः, मूलतः, अनिवार्यतः हम ही विश्व हैं। आप और यह विश्व एक ही हैं। इस तथ्य को गहराई से, निर्विवाद रूप से, मात्र कल्पनाशीलता में अथवा बौद्धिक रूप से ही नहीं अपितु वस्तुतः आत्मसात् करने पर हम पाते हैं कि हमारी समस्या एक वैश्विक समस्या हैं। यह मेरी अथवा आपकी कोई विशिष्ट समस्या न होकर मानव मात्र की समस्या हैं।
We are dealing with human, global problems, which is you as a human being, living in this monstrous, disintegrating world. So when we talk about relationship, we are talking about the relationship of man to man. And when you understand that relationship then you can come very much closer, which is you and your neighbour, you and your wife, you and your son and so on. So unless you have a global, universal, the entire whole human being, you will then merely live in fragments, as an American, or	इस प्रकार हम इस वैश्विक मानवीय समस्या का सामना कर रहे हैं कि मनुष्यों के रूप में हम एक विघटनशील दुनिया में रह रहे हैं। अतः जब हम सम्बन्धों के विषय में बातचीत करते हैं, तो वस्तुतः मनुष्य-मनुष्य के मध्य व्यापकतम सम्बन्ध को समझ लेने पर आप अपने पड़ोसी, अपनी पत्नी अपने पुत्र आदि के साथ अधिकाधिक निकट के अपने सम्बन्धों को भी समझ जाते हैं। समग्र मानव की भूमण्डलीय, वैश्विक भावना के अभाव में आप खण्डित, विभाजित जीवन ही व्यतीत करते रहेंगे। एक

a European, Communist, Socialist, Hindu, Buddhist and all the rest of the divisions that man has made.	अमरीकी, एक यूरोपी, एक साम्यवादी, एक समाजवादी, एक हिन्दू या एक बौद्ध के रूप में अथवा मनुष्य द्वारा निर्मित किसी अन्य ऐसे ही विभाजन पर आधारित।
So this is very important to understand if one may point it out: that we are concerned with man, which is you, you are the world, and the world is you. Where you go, whether you go in India, or Europe or come here, man is suffering, man is afraid, man wants to find out if there is some truth anywhere, if there is any god, if there is anything sacred, whether man can ever be free from fear, an end to sorrow, whether there is an eternity or only the ending of life, a fifty year life and that is the end of it. So we are concerned in our investigation of man, man, the universal man, or woman - in this country Women's Lib plays a big part, so I had better include the women in it too! When we say man we mean woman also, don't let us quarrel about words, it becomes rather childish.	हमारा सरोकार मानवजाति से है, जो आप स्वयं ही हैं। कहीं भी जाने पर हम पाते हैं कि मनुष्य संतप्त है, भयभीत है, वह जानना चाहता है कि क्या सत्य जैसा कुछ कहीं हैं – क्या ईश्वर है, क्या कुछ परम पावन है, क्या कुछ शाश्वत, अविनाशी भी है या फिर अंत हो जाना, मिट जाना ही जीवन की नियति है, और क्या मनुष्य कभी भय से मुक्त हो सकेगा, विषाद का अंत कर सकेगा। मनुष्य शब्द का प्रयोग करते हुए हमारा अभिप्राय स्त्री और पुरुष दोनों से ही होता है; हम शब्दों पर न झगड़ें अन्यथा यह सब बचकाना–सा हो जाता हैं।
In examination together there no authority, there is no teacher and the taught. Please this is very important what we are saying. In examining, in investigating together, sharing the problem together, there is no teacher and the taught, there is no guru and the disciple, therefore there is no authority, this is the basic thing one has to understand. In the world, psychological world, in the world of the spirit there is no authority. One may sit on a platform, as the speaker is, that doesn't give him any authority, and therefore you are not following him, or accepting what he is saying. It is good to have a great deal of scepticism, but that scepticism must be kept on a leash, and to know when to let it go and when to hold it.	हमारे इस सह–अन्वेषण में कोई भी मार्गदर्शन सत्ताधिकारी नहीं है, न कोई शिक्षक है न विद्यार्थी, न गुरु, न शिष्य, और इस प्रकार कोई भी, कैसी भी मानक सत्ता नहीं हैं। मनोरचना के क्षेत्र में, आत्मा के क्षेत्र में कोई सत्ता होती ही नहीं। आप इस वक्ता का अनुसरण नहीं कर रहे हैं, न ही उसके द्वारा कही गई बातों को स्वीकार करते जा रहे हैं। प्रचुर मात्रा में शंकालुता अथवा जिज्ञासु–वृत्ति का होना अच्छा होता है, परंतु इस शंकालुता को नियंत्रित रखा जाना चाहिए, आपको समझ होनी चाहिए कि कब उसे त्याग दिया जाय तथा कब उपयोग में लाया जाय।
So in examining this vast problem of existence and in investigating it, both of us must be very clear and understand that there is no authority, the one who knows and the other does not know. Together we are going to look into this. Whether you are capable of	हम दोनों को ही यह साफ–साफ समझ लेना चाहिए कि जीवन की इस विशाल समस्या के परीक्षण में कोई सत्ताधिकारी नहीं हो सकता जो कह सके कि वह जानता है और दूसरा नहीं जानता। हम वास्तविकता का साथ–साथ अवलोकन कर रहे हैं। यह एक भिन्न विषय है

looking, that is a different matter, whether you are intensely, consistently, pursuing the investigation depends on you. Whether you have the energy, the intention, the necessary persistence. And if you haven't then you make authority. I hope you realize this. If you are lazy, indolent, and then you give authority to another. Or if you are disorderly in your life and you see orderliness in another then you make him into an authority.	कि आप में शुद्ध अवलोकन की क्षमता है भी या नहीं। यह आप पर निर्भर है कि आप इस अन्वेषण में तीव्रता एवं दृढ़तपूर्वक भाग लेते हैं अथवा नहीं। यदि आपके पास ऊर्जा, अभीप्सा एवं आवश्यक धैर्य नहीं है तो आप मार्गदर्शक अधिकारी का निर्माण कर लेते हैं। यदि आप आलसी, सुस्त हें, तो आप दूसरों को अधिकार सौंप देते हैं। अथवा यदि आप अपने जीवन में अव्यवस्थित हैं तथा किसी अन्य के जीवन में व्यवस्था देखते हैं तो आप उसे अपना अधिकारी मानने लग जाते हैं।
So please from the very beginning of this talk and right through these three weeks, we are going together to examine without any sense of authority, which means freedom to look. Because one of the causes of this disintegrating society in which we live, is that we are followers - one of the causes. We accept spiritual authority, the intermediary, the priest, the analyst - I hope there are some here! We become incapable when we give ourselves over to another to find out about ourselves. And as we said, one of the causes of this disintegration that is taking place in the world is that we have accepted another as our authority, as our guide in matters of the spirit. We don't seem to be able to look into ourselves and examine very closely the whole human existence, which is yourself.	अतः कृपया स्पष्टतः समझ लें कि हमें किसी भी प्रकार के सत्ताधिकार के दबाव के बिना साथ-साथ परीक्षण करना है, जिसका तात्पर्य है देखने, अवलोकन करने की पूर्ण स्वतंत्रता। क्योंकि इस विघटनशील समाज का, जिसमें हम रह रहे हैं, एक प्रमुख कारण यह है कि हम अनुगामी बन गये हैं; हमने आत्म-विषयक क्षेत्र में आध्यात्मिक सत्ता, मध्यस्थ, पुजारी, विश्लेषक आदि को मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार कर लिया हैं। जब हम स्वयं अपने विषय में वास्तविकता जानने के लिए दूसरे पर अश्रित हो जाते हैं, तो हम अक्षम, असमर्थ बन जाते हैं। हम अपने भीतर झांककर सम्पूर्ण मानव-अस्तित्व का जो कि हम स्वयं ही हैं निरीक्षण परीक्षण करने में असमर्थ हैं।
So I hope we understand each other. That we are not agreeing or disagreeing, we are examining, investigating and therefore there is no authority, only freedom to examine. I do not know if you see the beauty of it? Then you and I have a relationship.	जब हम साथ-साथ परीक्षण-अन्वेषण करते हैं तथा किसी भी प्रकार का सत्ताधिकारी दबाव नहीं होता, केवल परीक्षण-अवलोकन हेतु पूर्ण स्वाधीनता होती है (कृपया इसके सौन्दर्य का अनुभव करें!), तब ही आपके व मेरे मध्य वास्तविक सम्बन्ध होता हैं।
One can look at what is happening about us, which is, disintegration, moral disintegration, politically, religiously, economically, socially, and in ourselves. One can find out many causes of it, many causes of this disintegration. That is, the word means breaking up, fragmentation taking place, both in the human being and in the society in which he lives. And one of the basic causes of this disintegration, this	मनुष्य में और उस समाज में, जिसमें वह रहता है, इस विघटन, इस विखण्डन के मूलभूत कारणों में से एक हैः धार्मिक भावना का नितांत अभाव। धर्म का अर्थ है सत्यान्वेषण हेतु अपनी समस्त ऊर्जा का संचयन; मन अथवा चेतना की उस अवस्था की खोज, उपलब्धि जिसमें सनातन सत्य, जो विचार द्वारा कल्पित, आविष्कृत न हो, विद्यमान रहता हैं। विघटन के कारणों में से एक हैः धार्मिक मन का अभाव, और दूसरा हैः

breaking up, is the utter lack of religious spirit. We are going to examine that word. Each person gives a meaning to that word according to his like and dislike, according to what he thinks his experience is, and therefore makes it a very small affair. The word 'religion' means according to a good dictionary, accumulating all your energy to investigate what is truth. To find out, to come upon that state of mind or consciousness in which there is truth, not invented by thought - which we shall go into presently in one of these talks. But one of the factors of this disintegration is the utter lack of the religious mind. And the other is basically the lack of morality. Not the Christian morality, or the Hindu morality, or the morality of permissiveness; morality implies orderliness, basic order, not according to a pattern, according to the convenience of environment, but an order that comes when you understand the nature of disorder, and therefore morality is a thing that is living.	नैतिकता का अभाव ईसाई अथवा हिन्दू नैतिकता नहीं, या जो चाहो सो करो वाली नैतिकता भी नहीं; नैतिकता का निहितार्थ है: सहज सुव्यवस्था, मौलिक सुव्यवस्था। यह किसी प्रारूप अथवा वातावरण की सुविधा के अनुसार सुव्यवस्था न होकर, वह सुव्यवस्था होती है जिसका उदय अव्यवस्था के स्वरूप को भली-भांति समझ लेने पर होता है; और यह सुव्यवस्था, यह नैतिकता बड़ी प्राणवान् होती है, कल्पित भर नहीं।
So that is what we are going to do: to look at this disintegrating world, which is your mind, you who are the essence of society, who are the basis of society in your relationships. And when there is no relationship then there is disintegration. Is this all right? Can we go on from there? So we are going to investigate what is relationship, what is fear, what is pleasure, what is sorrow, the whole meaning of death, and the very complex problem of meditation, and what is the quality of a mind that meditates. All that we are going to do. That means you have to be energetic, eager, passionate to find out.	यह विघटनशील विश्व आपका मन ही हैं। आप समाज के सार स्वरूप हैं; अपने सम्बन्धों के रूप में आप समाज के आधार हैं। और जब सम्यक् सम्बन्ध का अभाव होता है, तभी विघटन उत्पन्न होता हैं। अतः सम्बन्ध वस्तुतः क्या है? सम्बन्ध ही हमारे अस्तित्व का आधार है, हमारे समाज का आधार है, और जब तक इस सम्बन्ध में गहरी समझ-बूझ के साथ रूपान्तरण नहीं हो जाता, तब तक हम ध्यान विषयक प्रश्न में, या कि धर्म क्या है, सत्य क्या है आदि प्रश्नों में, कतई आगे नहीं बढ़ सकते। इस प्रकार सम्बन्ध वह आधारशिला है जिस पर हमारा दृढ़ता, स्पष्टतापूर्वक आरूढ़ होना अनिवार्य हैं।
So that is the bedrock upon which we must stand clearly and find out what it means to have relationship, to have right relationship, accurate relationship. Again the word 'accuracy' means factually, correct. What is relationship? What does it mean to be related to another? This is very important to find out, not to avoid, not to escape, but to find out actually what it means to have a	हमें पता लगाना चाहिए कि सही, शुद्ध, और त्रुटिहीन शब्द का अर्थ है: तथ्यतः शुद्ध। सम्बन्ध क्या है? किसी से सम्बन्धित होने का क्या अर्थ होता है शारीरिक धरातल पर, यौन धरातल पर, मानसिक धरातल पर, भावनात्मक धरातल पर या उस धरातल पर जिसे हम प्रेम कहते हैं? यदि सम्बन्ध की इस सम्पूर्ण प्रकृति और संरचना को प्रत्यक्षतः समझकर दैनन्दिन व्यवहार

relationship with another – at the physical level, sexually, psychological level, emotional level, intellectual level and at the level of what one calls love. And if that whole nature and structure of relationship is not understood, lived daily – please listen to this – if that relationship is not clear to go and meditate is utterly infantile, it has no meaning because this is the basis of life, then meditation merely becomes a futile, infantile escape. And in this country, the gurus and all the business, the transcendental meditation and all that, becomes utter stupid nonsense unless you establish right relationship between you and another, that being the very basis of existence, trying to meditate becomes an evasion of the actual. Therefore leads to all kinds of neurotic, destructive results. Right? You know the speaker has faced this problem of meditation and the gurus for the last fifty years. It is not prejudice but in matters of spirit there is no leader and taught, therefore no authority, no guru. It is the authority that has destroyed the investigation and the discovery of what is truth.	में नहीं लाया जाता, तो ध्यान करने बैठना नितांत बचकानी क्रिया बन जाती है, इसका कोई अर्थ नहीं होता क्योंकि तब ध्यान करना पलायन भर बन जाता हैं। जब तक आप अन्यों के साथ समयक् सम्बन्ध की स्थापना नहीं कर लेते, जोकि हमारे अस्तित्व का मूल आधार है, तब तक ध्यान करने का प्रयत्न करना वास्तविकता का नकार अथवा उससे पलायन बन जाता है जो अनेक प्रकार की भ्रान्तियों, विध्वंसक परिणामों की ओर ले जाता हैं।
So: what is relationship? What is the actual relationship in our daily life with each other? If you examine it very closely, and are not afraid, what is taking place? You have an image about yourself, first, don't you? A picture, an idea, a concept of yourself, and the person you are related to has his concept, or her concept, her image, her picture about herself. Right? Please you are looking at yourself, you are not merely listening to these words. Words are a mirror, and the mirror becomes useless when you are looking at yourself actually. So you and the other, man and woman, boy or girl or husband, wife and so on and so on, each human being has a picture, an image, a conclusion, an idea about oneself, about themselves.	हमारे दैनन्दिन जीवन में पारस्परिक सम्बन्ध कैसे हैं, क्या हैं? यदि आप आशंकित, भयभीत नहीं हैं और बारीकी से जांच करते हैं, तो जो कुछ घटित हो रहा है आप उसका अवलोकन करते हैं। आपके मन में अपने विषय में एक धारणा, एक कल्पना है; आपके पास अपने विषय में एक चित्र, एक विचार, एक परिकल्पना है तथा जिस व्यक्ति से आप सम्बन्धित हैं उसके पास भी अपने विषय में कोई धारणा, कोई कल्पना, कोई चित्र है कृपया स्वयं का अवलोकन करते चलें, इन शब्दों को मात्र सुनते ही न रह जाएं। शब्द दर्पण जैसे होते हैं; तथा जब आप स्वयं को वस्तुतः, प्रत्यक्षतः देख रहे होते हैं, तो दर्पण अनावश्यक, व्यर्थ हो जाता हैं। अतः आप और अन्य, पुरुष और स्त्री, बालक और बालिका, पति और पत्नी आदि, प्रत्येक के पास अपने विषय में कोई चित्र, कोई कल्पना, कोई निष्कर्ष, कोई विचार होता हैं।

If you have lived with another for a week, or a hundred weeks, you have made a picture of the other, and the other has made a picture of you, That is a fact, isn't it? No? Are you afraid to look at that picture? That picture has been built through many days, many years, many incidents, nagging, pleasure, comfort, fear, domination, possession, attachment and so on and so on and so on. Each one has an image of the other, and the other has an image of the other person. That is an actuality, isn't it? And you call that relationship. That is, relationship between the two pictures, between the two images. Right? You are not agreeing with the speaker. You are looking at the fact. These pictures or images or conclusions are memories, memories which you have put together, stored up in the brain, and reacting to each other according to those images. You have been hurt, and that hurt is a memory, stored up in the brain, and that reacts.	यदि आप किसी के साथ एक सप्ताह या सौ सप्ताह रहे हैं, तो आप उसके विषय में एक चित्र बना लेते हैं तथा वह भी आपका एक चित्र बना लेता हैं। यह एक तथ्य हैं। क्या इस चित्र को देखने में आपको भय-सा लग रहा हैं? इस चित्र का निर्माण अनेक वर्ष तथा अनेक घटनाओं से हुआ है आरोप, उलाहना, सुख, भय, वर्चस्व, स्वामित्व, आसक्ति आदि-आदि। और आप इसे सम्बन्ध कहते हैं। यह तो दो चित्रों, दो कल्पनाओं के मध्य सम्बन्ध हुआ। ठीक है न? आप वक्ता से सहमत भर नहीं हो रहे हैं, अपितु आप तथ्यावलोकन कर रहे हैं। ये चित्र, ये कल्पनाएं, ये निष्कर्ष स्मृतियां भर हैं जिन्हें प्रत्येक ने गढ़कर मस्तिष्क में संचित कर रखा हैं। और सभी लोग इन कल्पनाओं के अनुसार प्रतिक्रिया करते रहते हैं। आपको आघात लगता है, वह आघात मस्तिष्क में संचित एक स्मृति बन जाता है, और वह स्मृति प्रतिक्रिया करती हैं।
So our relationship is not actual but memorial. Do you understand what I am saying? If one is married you have built a picture about your wife, and the wife has built a picture, an image about you. Those pictures, those images are the nagging, the casual remarks, the hurts, the pleasure, the comfort, the sexual memories, all that. And the relationship is between these two verbal pictures in memory, not actual. I think you have got to understand this. And therefore there is always division and conflict. For instance, you have been hurt in this relationship. The hurt is, the image you have built about yourself has been hurt. Right? Can we go on?	इस प्रकार हमारा सम्बन्ध तथ्य-जन्य, वास्तविक नहीं होता, अपितु स्मृति-जन्य होता हैं। यदि आप विवाहित हैं तो आपने अपनी पत्नी के विषय में एक छवि बना रखी है, तथा पत्नी ने भी आपके विषय में एक छवि, एक कल्पना बना ली हैं। ये चित्र और छवियां पारस्परिक नोंक-झोक, आकस्मिक टिप्पणियों, आघातों, सुखों, सुविधाओं, यौन-स्मृतियों आदि सभी से मिलकर बनती हैं। और सम्बन्ध स्मृति में अंकित इन छवियों के, शाब्दिक चित्रों के मध्य रह जाता है; वह वास्तविक होता ही नहीं; और इसीलिए विभाजन और द्वंद्व सदैव बने रहते हैं। जब किसी सम्बन्ध के अंतर्गत आपको आघात लगता है, तो आपने अपने विषय में जो छवि बना रखी है, वह आहत होती हैं।
I wonder if you are actually observing it in yourself, or listening to the speaker and agreeing with the speaker? Do you understand? They are two different facts. Either you are agreeing with the speaker and therefore that has very little significance. Or you are actually seeing that you have built an image about yourself, and that hurt exists	पता नहीं आप वास्तव में आत्मावलोकन कर रहे हैं, या फिर वक्ता की बात सुनभर रहे हैं और उससे सहमत हो रहे हैं? ये दोनों पूर्वतः भिन्न तथ्य हैं। यदि आप वक्ता से सहमत भर हो रहे हैं, तो उसका महत्व नगण्य ही हैं। क्या आप वास्तव में देख पर रहे हैं कि आपने अपने विषय में एक छवि बना रखी है तथा यह भी कि इस छवि के कारण ही आघात अस्तित्व

because of that image. Understood?	में हैं?
So in this relationship of human beings the hurt has taken place. The image has been hurt. Unless you heal that image totally there must always be conflict. Right? There is the past hurts and you may receive further hurts. So there are two problems. Right? The one is that you have been hurt in the past and unfortunately this happens from childhood, in the school, in college, at home, university, right through life one is hurt. And because one is hurt one builds a wall around oneself to resist, not to be hurt any more. And having built a wall round oneself division takes place. Right? And you may say, 'I love you' but it is just words because a division exists. Right? So is it possible – please listen – is it possible not to be hurt at all? Which doesn't mean build a wall of resistance so that nothing can touch you, but to live without resistance which means never to be hurt.	तो छवि-जन्य सम्बन्धों में आघात उत्पन्न होता है; वहां आत्म-छवि आहत होती हैं। जब तक आप उस आहत छवि का पूर्ण उपचार नहीं कर लेते, तब तक द्वंद्व बना ही रहेगा। अतीत में लगे आघात तो हैं ही, आगे भी आपको आघात लग सकते हैं। दुर्भाग्य से आघात लगना बचपन से ही प्रारम्भ हो जाता है स्कूल में, कॉलेज में, घर पर। मनुष्य जीवन पर्यन्त आघात झेलता रहता है, और क्योंकि वह आहत है, वह और अधिक आहत होने से बचने के लिए अपने चारों ओर प्रतिरोधक दीवार खड़ी करता रहता हैं। जब भी कोई अपने चारों ओर दीवार खड़ी करता है, विभाजन उत्पन्न हो जाता हैं। आप कह सकते हैं, ''मैं तुमसे प्रेम करता हूं'', परंतु ये निरे शब्द ही होते हैं, क्योंकि विभाजन तो बना ही रहता हैं। क्या यह सम्भव है कि आहत हुआ ही न जाए। इसका मतलब यह नहीं है कि आप अपने चारों ओर एक प्रतिरोधी दीवार बना लें और आपको कोई भी कुछ भी छू न सके बल्कि इसका तात्पर्य है बिना किसी प्रतिरोध के जीना और कभी आहत न होना।
You understand? You know what it means to be hurt? When the child is compared with another, that is a hurt. Any form of comparison is to hurt another. Any form of imitation, conformity, is to hurt another, not only verbally but deeply. And when one is hurt, out of that hurt there is violence. So the problem is: is it possible never to be hurt? And having been hurt how to deal with the past hurts. And how to prevent future hurts. You have understood the problem? So we will find out.	आपको पता है कि आहत होने का क्या अर्थ है? जब एक बच्चे की अन्य से तुलना की जाती है, तो यह एक आघात ही होता हैं। किसी भी प्रकार की तुलना आघात पहुंचाती हैं। किसी भी प्रकार का अनुकरण, अनुसरण आघात पहुंचाता है, केवल शाब्दिक ही नहीं अपितु गहराई में भी। और जब कोई आहत होता है तो उस आघात में से हिंसा जन्म लेती हैं। अतः क्या कभी भी आहत हुए बिना जीना सम्भव है? हम पिछले आघातों का क्या करें, और भविष्य में लग सकने वाले आघातों को किस प्रकार असम्भव बनायें? हम यहां इसी का पता लगाएंगे।
When you say, 'I am hurt' what is this me that is hurt? You say, 'You have hurt me' – by your word, by a gesture, by discourtesy and so on and so on. What is hurt? Is it not the image that you have built about yourself? Please do look at it. That image is one of the factors which society, education and environment has built in you. You are that picture, that image, the name, the form,	जब आप कहते हैं, ''मैं आहत हुआ हूं'', तब यह ''मैं'' जो आहत हुआ है, वस्तुतः क्या है? आप कहते हैं, ''आपने मुझे आहत किया है'' किसी शब्द द्वारा, किसी भाव-भंगिमा द्वारा, विनय-हीनता द्वारा आदि, आदि। तो कौन, क्या चीज आहत होती है? क्या यह आपकी स्व-निर्मित आत्म छवि ही नहीं होती? कृपया इसका अवलोकन करें। वह आत्म-छवि जो

the characteristic, the idiosyncrasy and so on. All that is you, the picture, the image which you are. And that image has been hurt. You have a conclusion about yourself, that you are this or that, and when that conclusion is disturbed you are hurt. You are following all this? So can you live without a conclusion, without a picture, without an image about yourself? As long as you have an image about yourself you are everlastingly hurt. You may resist it, you may build a wall round yourself but when there is a wall around yourself, when you withdraw there is a division, and where there is a division there must be conflict. Like the Arab and the Jew, the Hindu, the Muslim, the Communist and the non-Communist – you follow? Where there is a division it is the law, there must be conflict.	समाज ने, शिक्षा ने, वातावरण ने आपमें निर्मित की है, आघात का एक कारण हैं। वह छवि, वह कल्पना, नाम, रूप गुण, विशिष्ट मानयता–विश्वास, इत्यादि ही तो ‘‘आप’’ हैं। आप वही सब कुछ हैं, वह चित्र, वह छवि आदि। और वह आत्म–छवि आहत होती हैं। आपका अपने विषय में कोई निष्कर्ष है कि आप यह या वह हैं। जब इस निष्कर्ष को चुनौती दी जाती है, उखाड़ा–नकारा जाता है, तो आप आहत हो जाते हैं। तो क्या आप बिना किसी निष्कर्ष के, बिना किसी चित्र के, बिना किसी कल्पना के जीवन–यापन कर सकते हैं? जब तक आप अपने विषय में आत्म–छवि बनाए हुए हैं, तब तक आप अनवरत आहत होते रहेंगे। आप इसका विरोध कर सकते हैं, अपने चारों ओर एक सुरक्षा–भित्ति खड़ी कर सकते हैं, परंतु जब आप चारों ओर दीवार से धिरे होते हैं, जब आप अलग–थलग हो जाते हैं, तो विभाजन उत्पन्न होता हैं। और जहां कही भी विभाजन होता है, वहां द्वंद्व भी अनिवार्यतः होता है जैसा कि अरब–यहूदी, हिन्दू–मुसलमान, सामयवादी– गैरसाम्यवादी आदि के साथ हैं। वह विधान है कि वहां द्वंद्व भी होगा।
So: is it possible not to be hurt at all? That is to have an innocent mind. The word ‘innocent’ in Latin and so on means a mind that is incapable of being hurt. And this is very important to find out if one can live in daily life, not to go off into some monastery or in some community, limit your – you know, all agreeing together, becoming mushy and sentimental and all that business – but actually in daily life to find out if you can live without an image, and therefore never to be hurt. We are going to find out. We are going to examine whether it is possible to live that way. Which means never to have conflict, never to have this division, psychological division – there is a division between you and me, tall, short, brown, white, black and so on and so on, but the psychological division.	अतः, क्या यह सम्भव है कि आहत हुआ ही न जाए? इसका अर्थ है सरल व मुक्त मन, ऐसा मन जिसके लिए आहत हो सकना समभव ही न रह गया हो। यह पता लगाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि इस प्रकार दैनन्दिन जीवन–यापन सम्भव भी है अथवा नहीं। इसका यह अर्थ नहीं कि किसी आश्रम या ऐसे समुदाय में जा छिपना जिसमें सभी आपस में सहमत हों, अथवा स्वप्निल या भावुक हो जाना; बल्कि दैनन्दिन जीवन में यह पता लगाना कि क्या आप बिना किसी आत्म–छवि के, और इस प्रकार बिना आहत हुए रह सकते हैं। इसका अर्थ होता है कभी भी द्वंद्व अथवा मानसिक विभाजन में न पड़ना। हम पता लगाने जा रहे हैं। हम जांचने–परखने जा रहे हैं कि क्या इस प्रकार जीवन–यापन सम्भव हैं।
So first to be aware that one has this image. Not to rationalize it, not to say it is inevitable, we must have it, otherwise what	सर्वप्रथम इस तथ्य के प्रति सभान हो जाइये कि आपने आत्म–छवि बनाई हुई हैं। जब मैंने

would happen, if I don't have an image about myself how can I live in this world when everybody around me has images, they will destroy me. Those are all excuses. But to find out whether it is possible without a single image. Because the image is the Arab, the image is the Jew - do you understand this? And therefore there is eternal war. When I have an image about myself and that is hurt and my wife has an image about herself she is hurt, how can we have any kind of relationship? So is it possible not to have an image, which means not to be hurt? One has been hurt in the past, one has resisted it, built a wall round oneself, frightened not to be hurt any more, and there may be future hurts and therefore withdrawal, isolation. Now how will you deal with the past hurts? Please follow all this. Will you analyse them? Do you understand? Analyse why you have been hurt, what are the causes of your hurt, who has hurt you, you know, go into it analytically.	अपने विषय में छवि बनाई हुई है, और वह भी आहत होती रहती है, तो हमारे मध्य किसी प्रकार का भी सम्बन्ध कैसे रह सकता है? तो, कोई भी छवि न रखना अर्थात् कभी भी आहत न होना, क्या सम्भव हैं? मैं पहले आहत हो चुका हूं, और मैंने उसका प्रतिरोध भी किया, अपने चारों ओर सुरक्षा–भित्ति भी खड़ी की तथा और अधिक आहत होने की सम्भावना से भयभीत रहा इस प्रकार मैं अलग–थलग और अकेला पड़ गया। इन पिछले आघातों का आप क्या करेंगे? क्या आप विश्लेषण करेंगे कि आप आहत क्यों हुए थे, अपने आघातों के कारणों का पता लगाएंगे? क्या इस चुनौती का सामना आप विश्लेषणात्मक विधि से करेंगे?
Again look at the analytical tradition: we have accepted analysis as part of our life. Right? If you cannot analyse yourself you go to the professional. What is the process of analysis? There is the analyser and the analysed. Right? See the division already. Are you following all this? I hope you are otherwise it is a waste, there is no point in my talking about it. You are examining your analysing your hurts. When you analyse, the process is the analyser and the analysed. Right? So there is a division. Is not the analyser - please listen carefully - is not the analyser the analysed? Right? You follow this? So you have created an artificial division, which is the analyser is thinking differently from the analysed, but in actuality the analyser is the analysed. Right? So there is a fundamental error in the process of analysis. And in the process of analysis you take time, days, months, years - you know the game that you all play, and enriching each other in your own peculiar ways, financially and emotionally and all the rest of it.	अब इस विश्लेषण पर आधारित परम्परा को देखें। हमने विश्लेषण को अपने जीवन के अंग के रूप में मान लिया हैं। जब आप स्वयं अपना विश्लेषण नहीं कर पाते, तो आप व्यावसायिक विशेषज्ञों के पास जाते हैं। वस्तुतः विश्लेषण की प्रक्रिया क्या हैं? इसमें सदैव ही एक विश्लेषक होता है तथा दूसरा विश्लेष्य विषय (जिसका विश्लेषण किया जाना हैं)। इस प्रकार आप विश्लेषक व विश्लेष्य जैसा एक कल्पित विभाजन उत्पन्न कर लेते हैं, जबकि विश्लेषक वस्तुतः विश्लेष्य ही होता हैं। अतः विश्लेषण की प्रक्रिया में एक मूलभूत दोष, त्रुटि रहती हैं। फिर, विश्लेषण की प्रक्रिया में समय लगता है दिन, महीने, वर्ष और आर्थिक, भावनात्मक व अन्यान्य विचित्र प्रकारों से एक–दूसरे को समृद्ध करते जाने का यह खेल चलता रहता हैं। इस प्रकार विश्लेषण की प्रक्रिया के मौलिक दोष को देख–समझ लेने के बाद आप अतीत के आघातों तथा भविष्य में लग सकने वाले आघातों से भी, कैसे मुक्त होंगे?

We will go into it together, share together. That is, the speaker is not telling you what to do. The speaker and you are sharing this question, to find out actually, in daily life, whether it is possible to live without a single hurt, because then you will know what love is.	वक्ता और आप एक-साथ इस प्रश्न के भीतर जा रहे हैं, यह पता लगाने के लिए कि क्या एक भी आघात ग्रहण किए बिना दैनन्दिन जीवन यापन सम्भव है? क्योंकि तभी आपको पता चलेगा कि प्रेम क्या हैं।
Hurt and flattery are the same, aren't they? I wonder if you realize it? Both are different forms of hurts - no? You are flattered and you like it, and the flatterer becomes your friend. So that also is another form of encouraging the image. Right? The one you want, the other you don't want. So we are only now dealing with what we don't want. Which is not to be hurt. But we want the other, which is pleasurable, which is comforting, comforting, pleasing to the images that we have. So both are the same. Now how am I, how is a human being to be free of hurt? So we have to go into the question of what it is to be attentive - sorry to expand this question.	आहत होना और चापलूसी का पात्र होना मूलतः समान हैं; दोनों ही अलग-अलग ढंग के आघात हैं। आपकी प्रशंसा की जाती है, यह आपको प्रिय लगती है, और प्रशंसक आपका मित्र बन जाता हैं। तो यह भी आपके भीतर छवि-निर्माण को ही प्रोत्साहित करती हैं। एक घटना आपको प्रिय है, उसे आप चाहते हैं तथा दूसरी जिसे आप नहीं चाहते। अभी तक हम उस घटना पर विचार करते रहे हैं जिसे हम नहीं चाहते, अर्थात् आहत न होना; लेकिन दूसरी घटनाओं को हम चाहते हैं वे सुख-सुविधा देने वाली हैं, हमारी आत्म-छवि को प्रिय लगती हैं। इस प्रकार, आत्म-छवि को पुष्ट करने के समान, परिणाम की दृष्टि से आघात एवं स्तुति दोनों ही समान हैं। अब विचार करें कि मैं, अथवा कोई भी मनुष्य, आघात से पूर्ण मुक्ति कैसे प्राप्त करे? इसके लिए हमें इस प्रश्न पर विचार करना होगा कि सजग होने अथवा ध्यान देने का क्या अर्थ हैं?
What does it mean to attend? Because if you know what it means to attend it may solve the problem. I will show it to you - or rather I won't show it to you, we will share it together. Have you ever given total attention to anything? Complete attention in which there is no centre from which you attend. Do you understand the question? When there is a centre from which you attend then there is a division. I wonder if you follow this? No, I see you don't. Let's put it differently.	सजग होना किसे कहते हैं? यदि आप सम्यक् रूप से सजग होना जानते हैं, तो इससे आपकी द्वंद्व की समस्या हल हो सकती हैं। क्या आपने कभी किसी घटना पर पूर्ण ध्यान दिया है? ऐसा समग्र ध्यान जिसमें ध्यान देने वाला केन्द्र जहां से ध्यान दिया जा रहा हो, होता ही नहीं। जब कोई ऐसा केन्द्र होता है जहां से आप ध्यान देते हैं, तो वहां पर विभाजन भी अवश्य रहता हैं। आइये, हम इसे भिन्न प्रकार से समझें।
All right. You know what it is to be aware - do you? To be aware. That is, one is aware of the trees under which we are sitting, aware of the branches, the colour of the branches, the leaves, the shadows, the thickness, aware of all the nature, the beauty of it. Then you are also aware of sitting on	आप जानते हैं कि सभान होना, जागरूक होना क्या है? आप इन वृक्षों के प्रति सभान हैं जिनके नीचे हम बैठे हैं, उनकी शाखाओं के प्रति, शाखाओं के रंग व उनकी मोटाई के प्रति, पत्तियों, छायाओं, तथा समस्त प्रकृति एवं उसके सौन्दर्य के प्रति सभान हैं। (ओहाय वार्ताएं

the ground, the colour of the carpet, the speaker, the microphone. And can you be aware of all this, the microphone, the carpet, the earth, the colour of the leaves and so on, the blue shirt and the white shirt, and the desk, aware of all that without any choice? You understand? To look at it without any choice, judgement, just to look.	ओक–वृक्षों के एक खुले प्रांगण में आयोजित की गई थी।) आप भूमि पर बैठे होने, कालीन के वर्ण, माइक्रोफोन आदि के प्रति भी सभान हैं। क्या आप इन सबके प्रति माइक्रोफोन, कालीन, पृथ्वी, पत्तियों के रंग, नील–वर्णी शर्ट आदि इन सभी के प्रति चुनावहीन ढंग से सभान हो सकते हैं? बिना किसी चुनाव, बिना किसी मूल्यांकन, निष्कर्ष अथवा निर्णय के इस समग्रता का अवलोकन करना, मात्र अवलोकन भर करना।
If you can do it, that is to look without any judgement, without any choice, just to observe, in that observation there is no observer. Right? The moment the observer comes in prejudice begins, the like and the dislike, I prefer this, I don't prefer that, division takes place. Right? So there is attention only when there is no entity who says, 'I am attending'. Right? Please, it is important to understand this. Because if you know, if there is an attention then you will see you will never be hurt again. And the past hurts are wiped away. That is, when there is an awareness in which there is no choice, no judgement, merely observation, but the moment the observer comes in then the observer gets hurt. Right? Do you understand?	यदि आप बिना चुनाव, बिना किसी निर्णय के अवलोकन कर सकते हैं, तो इस प्रकार के अवलोकन में कोई प्रेक्षक अथवा द्रष्टा नहीं होता। जैसे ही द्रष्टा आता है, वैसे ही रूचि, अरूचि जैसे पूर्वाग्रह सक्रिय हो जाते हैं, ‘‘मैं इसे अधिक पसंद हूं, मैं उसे पसंद नहीं करता’’ जैसे विभाजन उत्पन्न हो जाते हैं। इस प्रकार सम्यक् जागरूकता तभी होती है, जब ‘‘मैं ध्यान दे रहा हूं’’ ऐसा कहने वाला कोई केन्द्र नहीं होता। कृपया इसे सावधानी पूर्वक समझें, यह अति महत्वपूर्ण समझें, यह अति महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि जब जागरूकता होती है, चुनावविहीन, निर्णविहीन सभानता होती है, मात्र अवलोकन भर होता है, तब आप पाते हैं कि आप आहत नहीं हो सकते, तथा अतीत के आघात भी विलुप्त हो जाते हैं। परंतु जैसे ही प्रेक्षक अथवा द्रष्टा का प्रवेश होता है, तभी यह द्रष्टा आहत होता है और आघात उत्पन्न हो जाता हैं।
So, when somebody says something to the picture that is going to be hurt, when there is complete attention there is no hurt. Have you understood? Somebody calls the speaker a fool, arrogant, or this or that. To listen to that word, to see the meaning of that word and give complete attention to it, then there is no past hurt, or the future hurt because there is no entity who is observing. I wonder if you get this? No, please, this is very important because we are going to go into this in all our talks. That as long as there is a division there must be conflict, because this is very important in dealing with fear, with pleasure, with sorrow, with death, all of that, that as long as there is a division between the observer, the	अतः जब पूर्ण सजगता और सावधानी होती है, तब आघात नहीं लगता। यदि कोई कहता है कि वक्ता मूर्ख है, मिथ्याभिमानी है, तो इन शब्दों को सुनने तथा उन पर समग्र ध्यान देने में न तो कोई पिछला आघात होता है, न भावी, क्योंकि इस समग्र ध्यान में अवलोकन करने वाला कोई सीमित, केन्द्रित अस्तित्व होता ही नहीं। कृपया इसके अत्यधिक महत्व को समझें, क्योंकि जब तक विभाजन रहता है द्वंद्व रहता ही हैं। भय, सुखासक्ति, विषाद, मृत्यु आदि के समय यह समझना अतिशय महत्वपूर्ण है कि जब तक प्रेक्षक, अनुभवकर्ता, विचारक और विचार में विभाजन रहता है, तब तक द्वंद्व, नाना प्रकार के विभाजन, विखण्डन तथा विघटन भी अनिवार्यतः चलते हैं। तो क्या आप वृक्ष का, स्वयं अपना, अपने पड़ोसी का, समपूर्ण

experiencer, the thinker and the thought, there must inevitably be conflict, division, fragmentation, and therefore disintegration. So can you observe the tree, yourself, your neighbour, observe life completely attentively? Then can you observe with total attention the picture that you have about yourself? And when you give that complete attention is there a picture at all? You understand? You have understood it?	जीवन का समग्र ध्यानपूर्वक, जागरूकतापूर्वक अवलोकन कर सकते हैं? इसके बाद क्या आप अपने विषय में निर्मित आत्म-छवि का सम्पूर्ण ध्यानपूर्वक अवलोकन कर सकते हैं? और जब आप इस प्रकार सम्पूर्ण ध्यान देते हैं, तब क्या किसी प्रकार की कोई आत्म-छवि शेष रह जाती हैं?
So when there is no image, no picture, no conclusion then what is the relationship between two human beings? You have understood? Now our relationship is based on division, which is an obvious fact. The man goes to the office, there he is brutal and ambitious, greedy and all the rest of it, comes home and he says, 'Darling, how lovely'! So there is contradiction in our life, and therefore our life is a constant battle. And therefore no relationship. And to have real human relationship is to have no image whatsoever. Then there is no image, no picture, no conclusion, and it is quite complex this question, because you have memories. Can you be free of memories of yesterday's incidents so that you are - you follow? All that is implied. Then what is the relationship between two human beings who have no images? You will find out if you have no image. That may be love.	जब कोई छवि, कोई चित्र, कोई निष्कर्ष शेष नहीं रहता, तब दो मनुष्यों के मध्य सम्बन्ध कैसा होता है? वर्तमान में हमारे सम्बन्ध विभाजन पर आधारित हैं, जो एक तथ्य हैं। कोई मनुष्य जिसका अपने कार्यालय में आचारण निर्दयी, महत्वाकांक्षी तथा लोभी है, घर आकर अपनी पत्नी से कहता है, ''प्रिये! तुम कितनी मोहक हो'', तो यह अंतर्विरोध ही है। इस प्रकार हमारे दैनन्दिन जीवन में अंतर्विरोध हैं, इसीलिए हमारा जीवन अंतहीन युद्ध जैसा है, और इसीलिए हमारा जीवन वस्तुतः सम्बन्ध-विहीन हैं। वास्तविक मानवीय सम्बन्ध के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि किसी भी प्रकार की आत्म-छवि, चित्र, निष्कर्ष आदि कतई शेष न रहें। और यह अत्यन्त जटिल है, क्योंकि आपके पास स्मृतियों का विशाल भण्डार हैं। क्या आप विगत कल की घटनाओं की स्मृतियों से मुक्त हो सकते हैं? आत्म-छवि से रहित जीवन में यह सब निहित हैं। तो, उन दो मनुष्यों के मध्य सम्बन्ध कैसा होता है जो आत्म-छवियों से मुक्त हैं? यह आप तभी जान पाएंगे जब आप स्वयं आत्म-छवि से मुक्त होंगे। यह सम्बन्ध प्रेम हो सकता हैं।
	ओहाय, ३ अप्रैल १९७६
	अनुवाद : डॉ. पी. सी. अग्रवाल,
****	
	सम्बन्धों की बुनियाद
Question: You have often talked of relationship. What does it mean to you?	प्रश्न : आपने अक्सर सम्बन्धों की बात की है; आपके लिए इसका क्या अर्थ है?
Krishnamurti: First of all, there is no such thing as being isolated. To be is to be related and without relationship there is no existence. What do we mean by	कृष्णमूर्ति : पहली बात तो यह कि ऐसी कोई चीज नहीं है जिसे हम अलग और अकेला होना कहते हैं। हमारे होने का अर्थ ही है कि हम जुड़े हुए हैं, क्योंकि बिना सम्बन्धों के

relationship? It is an interconnected challenge and response between two people, between you and me, the challenge which you throw out and which I accept or to which I respond; also the challenge I throw out to you. The relationship of two people creates society; society is not independent of you and me; the mass is not by itself a separate entity but you and I in our relationship to each other create the mass, the group, the society.	हमारा अस्तित्व ही सम्भव नहीं हैं। सम्बन्ध से आपका क्या मतलब है? यह दो लोगों के बीच, आपके और मेरे बीच एक चुनौती है, जिसका उत्तर हमें और आपको मिलकर देना हैं। दो इंसानों के बीच जो रिश्ता है उससे समाज बनता है; समाज मुझसे और आपसे अलग नहीं है, समाज का अपने-आप में कोई अलग वजूद नहीं है, बल्कि आपके और मेरे परस्पर से इसका निर्माण हुआ हैं।
Relationship is the awareness of interconnection between two people. What is that relationship generally based on? Is it not based on so-called interdependence, mutual assistance? At least, we say it is mutual help, mutual aid and so on, but actually, apart from words, apart from the emotional screen which we throw up against each other, what is it based upon? On mutual gratification, is it not? If I do not please you, you get rid of me; if I please you, you accept me either as your wife or as your neighbour or as your friend. That is the fact.	दो लोगों के आपसी जुड़ाव की समझ रिश्ते को जन्म देती हैं। आम तौर पर यह रिश्ता किस चीज पर टिका होता है? क्या यह परस्पर निर्भरता, आपसी सहयोग पर नहीं टिका होता? कम-से-कम हम कहते तो ऐसा ही हैं - किन्तु शब्दों और जज़्बाती दलीलों से परे जाकर सच्चाई क्या है, हमारे सम्बन्ध वास्तव में किस चीज पर टिके हुए हैं? स्वार्थ पर, स्वहित पर? क्या ऐसा नहीं है? यदि मुझसे आपका कोई हित नहीं सधता तो आप मुझसे छुटकारा पाने की सोचते हैं, और यदि मुझसे आपका कोई मतलब सिद्ध होता है तो आप मुझे तहेदिल से स्वीकार करते हैं, कभी पत्नी के रूप में, कभी पड़ोसी के रूप में, तो कभी दोस्त के रूप में। यह हक़ीक़त हैं।
What is it that you call the family? Obviously it is a relationship of intimacy, of communion. In your family, in your relationship with your wife, with your husband, is there communion? Surely that is what we mean by relationship, do we not? Relationship means communion without fear, freedom to understand each other, to communicate directly. Obviously relationship means that – to be in communion with another. Are you? Are you in communion with your wife? Perhaps you are physically but that is not relationship. You and your wife live on opposite sides of a wall of isolation, do you not? You have your own pursuits, your ambitions, and she has hers. You live behind the wall and occasionally look over the top – and that you call relationship. That is a fact, is it not? You may enlarge it, soften it, introduce a	जिसे आप परिवार या कुटुंब कहते हैं, वह क्या हैं? स्पष्ट रूप से यह अंतरंगता, घनिष्ठता और सहभागिता का रिश्ता हैं। आपके अपने परिवार में, पति या पत्नी के साथ आपके रिश्तों में, क्या समरसता है? यहीं से, निश्चिय तौर पर, सम्बन्धों की बुनियाद तय होती हैं। सम्बन्धों का मतलब है एक ऐसी सहभागिता, एक ऐसा तुड़ाव जिसमें कोई भय न हो, जिसमें एक-दूसरे को समझने, जानने और सीधे संवाद करने की पूरी स्वधीनता हो। जाहिर तौर पर किसी भी दूसरे के साथ समरस, एकात्म होना ही रिश्ते की बुनियाद हैं। क्या आपके साथ ऐसा है? क्या आप अपनी पत्नी के साथ समरस हैं? जिस्मानी तौर पर आप भले ही हों, लेकिन सिर्फ वही तो रिश्ता नहीं हैं। आप दोनों के बीच अलगाव की एक दीवार है; क्या नहीं है? आप दोनों की अपनी-अपनी आकांक्षाएं हैं, चाहते हैं, तलाश हैं। आप मुखौटों के पीछे बसते हैं और कभी-कभार बाहर झांक कर देख लेते हैं और

new set of words to describe it. but that is the fact – that you and another live in isolation, and that life in isolation you call relationship.	इसे ही आप सम्बन्ध कहते हैं। यह सचाई है, क्या नहीं है? आप कितना-ही इसे ढ़कने, छुपाने और इस पर नयी-नयी दलीलों का जामा पहनाने की कोशिश करें, पर सचाई अपनी जगह रहेगी, कि आप अलगाव में जीते हैं, और अलगाव की उस जिन्दगी को आप रिश्ते का नाम देते हैं।
If there is real relationship between two people, which means there is communion between them, then the implications are enormous. Then there is no isolation; there is love and not responsibility or duty. It is the people who are isolated behind their walls who talk about duty and responsibility. A man who loves does not talk about responsibility – he loves. Therefore he shares with another his joy, his sorrow, his money. Are your families such? Is there direct communion with your wife, with your children? Obviously not. Therefore the family is merely an excuse to continue your name or tradition, to give you what you want, sexually or psychologically, so the family becomes a means of self-perpetuation, of carrying on your name. That is one kind of immortality, one kind of permanency. The family is also used as a means of gratification. I exploit others ruthlessly in the business world, in the political or social world outside, and at home I try to be kind and generous. How absurd! Or the world is too much for me, I want peace and I go home. I suffer in the world and I go home and try to find comfort. So I use in the world and I go home and try to find comfort. So I use relationship as a means of gratification, which means I do not want to be disturbed by my relationship.	यदि हमारे और आपके बीच सच्चे अर्थों में सम्बन्ध है, जिसका मतलब है कि हमारे और आपके बीच एकात्मता यानी समरसता है तो इसके परिणाम भी असाधारण होगे। तब पार्थक्य या अलगाव या विभाजन जैसी कोई चीज नहीं होगी, तब सिर्फ प्रेम होगा। तब लोग अपने-अपने दड़बों में बंद होकर कर्तव्य और जिम्मेदारी की बातें नहीं करेंगे। प्रेम करने वाले फ़र्ज वग़ैरा की बातें नहीं करते वे सिर्फ प्रेम करते हैं; और अपने सुखों में, दुखों में सबों को भागीदार बनाते हैं। क्या आपके परिवार ऐसे हैं? अपनी पत्नी, अपने बच्चों के साथ क्या आपके सम्बन्ध सहज और वास्तविक हैं? आपके बीच समरसता है? नहीं है! आपके परिवार सिर्फ आत्मतुष्टि और स्वहित के साधन बनकर रह गये है; परिवार की आड़ में आप अपनी इच्छाओं, वासनाओं की पूर्ति करते हैं, अपना और अपने खानदान का नाम भुनाने के लिए आप इसका इस्तेमान करते हैं। यह एक तरह से अपने को अजर-अमर बनाने का मोह ही हैं।
Thus relationship is sought where there is mutual satisfaction, gratification; when you do not find that satisfaction you change relationship; either you divorce or you remain together but seek gratification elsewhere or else you move from one relationship to another till you find what you seek – which is satisfaction, gratification, and a sense of self-protection and comfort.	बाहरी दुनिया में तो मैं जमकर औरों का शोषण करता हूं, निर्ममता से लोगों का अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करता हूं, और घर वापस आकर मैं उदार, और स्नेह लुटाने वाला बन जाता हूं! कैसा बेतुकापन, कैसा कपटपूर्ण ढोंग हैं! दुनिया की भाग-दौड़ से मैं थक जाता हूं, घर लौटने पर शांति और सुकून चाहता हूं! इस तरह हम लगातार अपने सम्बन्धों का उपयोग अपनी

After all, that is our relationship in the world, and it is thus in fact. Relationship is sought where there can be security, where you as an individual can live in a state of security, in a state of gratification, in a state of ignorance – all of which always creates conflict, does it not? If you do not satisfy me and I am seeking satisfaction, naturally there must be conflict, because we are both seeking security in each other; when that security becomes uncertain you become jealous, you become violent, you become possessive and so on. So relationship invariably results in possession in condemnation, in self-assertive demands for security, for comfort and for gratification, and in that there is naturally no love.	सन्तुष्टि के लिए करते हैं। जब तक हमें सुख और सन्तुष्टि मिलती रहती है तब तक उस सम्बन्ध को हम जिलाए रखते हैं और जैसे-ही ऐसा होना बंद हो जाता है हम उस सम्बन्ध से मुंह मोड़ लेते हैं, स्वार्थसिद्धि के लिए कोई और जमीन तलाशने लगते हैं। हमारे आपसी सम्बन्धों की बुनियाद इसी बात पर टिकी हुई है कि हम किस मात्रा में एक-दूसरे का इस्तेमाल कर सकते हैं, किस मात्रा में एक-दूसरे में सुरक्षा, सुख और सन्तुष्टि खोज सकते हैं। चूंकि हम एक-दूसरे में एक-ही चीज तलाश रहे हैं, इसलिए ऐसा न होने पर कुंठा, परस्पर विरोध और संघर्ष का होना स्वाभाविक है; जिस सुख और सुरक्षा की तलाश हम अपने सम्बन्धों में कर रहे हैं, वह न मिलने पर हम कुठा और आक्रोश से भर उठते हैं, स्वामित्व-आधिपत्य की भूख से जलने लगते हैं, हिंसक और क्रूर बन जाते हैं। हमारी और हमारे सम्बन्धों की यही अस्लीयत है और ऐसी बुनियाद पर प्रेम की कल्पना करना सरासर बेहूदगी हैं।
We talk about love, we talk about responsibility, duty, but there is really no love; relationship is based on gratification, the effect of which we see in the present civilization. The way we treat our wives, children, neighbours, friends is an indication that in our relationship there is really no love at all. It is merely a mutual search for gratification. As this is so, what then is the purpose of relationship? What is its ultimate significance? If you observe yourself in relationship with others, do you not find that relationship is a process of self-revelation? Does not my contact with you reveal my own state of being if I am aware, if I am alert enough to be conscious of my own reaction in relationship? Relationship is really a process of self-revelation, which is a process of self-knowledge; in that revelation there are many unpleasant things, disquieting, uncomfortable thoughts, activities. Since I do not like what I discover, I run away from a relationship which is not pleasant to a relationship which is pleasant. Therefore, relationship has very little significance when we are merely seeking mutual gratification but becomes	हम बात करते हैं प्रेम की, दायित्व की, कर्तव्य की, और हक़ीकत यह है कि हमारा इन सबसे दूर-दूर तक कोई वास्ता नहीं हैं। हमारे सम्बन्धों की बुनियाद क्या है, यह हम देख चुके हैं और इसके नतीजे क्या हैं, यह हम अपनी सभ्यता की दुर्गति के रूप में सामने देख रहे हैं। अपनी पत्नी, बाल-बच्चे, पड़ोसियों और मित्रों के साथ हमारे सम्बन्धों की जो हकीकत है वह इस बात का पक्का सबूत है कि हमारे बीच प्रेम जैसी कोई चीज है ही नहीं। महज एक-दूसरे को इस्तेमाल कर ले जाने भर की अंदरूनी कसक हैं। ऐसी आखिर हमारे सम्बन्धों के मायने क्या हैं? क्या अर्थ है हमारे सम्बन्धों का? क्या आपको नहीं लगता कि सम्बन्ध एक-दूसरे को उद्घटित करने, एक-दूसरे को वास्तव में जानने-पहचानने और इस तरह आत्मज्ञान की ही एक प्रक्रिया है? जब मैं आपसे मिलता हूं और यदि मैं अपने भीतर उठने वाली प्रतिक्रियाओं के प्रति सजग और सचेत हूं तो क्या मैं खुद को ही आपमें, यानी आपके साथ मेरा जो रिश्ता है उसमें, नहीं देख लेता हूं? उद्घाटन की यह प्रक्रिया बड़ी तकलीफदेह भी हो सकती है क्योकि तब मुझे अपनी हकीकत, अपनी वास्तविकता से आमना-सामना करना पड़ता हैं। इस सबके बाबजूद यदि

extraordinarily significant when it is a means of self-revelation and self-knowledge.	आत्म–उद्घाटन और आत्मज्ञान की प्रक्रिया हमारे सम्बन्धों में चलती हैं तो हमारे असाधारण रूप से अर्थवान हो उठते हैं।, अन्यथा उनके कोई मायने नहीं रह जाते।
After all, there is no relationship in love, is there? It is only when you love something and expect a return of your love that there is a relationship. When you love, that is when you give yourself over to something entirely, wholly, then there is no relationship.	देखा जाए तो प्रेम किसी ढांचे रूपी सम्बन्ध या रिश्तेदारी पर निर्भर नहीं होता। ऐसा सम्बन्ध तभी पैदा होता है जब हम प्रेम करते हैं और उसके बदले की अपेक्षा रखते हैं। जब आप प्रेम करते हैं, जिसका मतलब है कि आप स्वयं को सर्वांश में, पूर्णतया विसर्जित करते हैं, तब सम्बन्ध रूपी किसी ढांचे का महत्व नहीं रहता।
If you do love, if there is such a love, then it is a marvellous thing. In such love there is no friction, there is not the one and the other, there is complete unity. It is a state of integration, a complete being. There are such moments, such rare, happy, joyous moments, when there is complete love, complete communion.	यदि आप वास्तव में प्रेम से भरे हैं तो यह अपने–आप में एक अत्यन्त अद्भुत घटना हैं। सम्पूर्णतया एकात्म हो जाने की घटना प्रेम है; यहां मेरे–तुम्हारे का विभाजन जरा–भी शेष नहीं बचता, यहां होती है तो सिर्फ निपट सम्पूर्णता और एकलयता। ऐसे कुछ विरले क्षण आते भी हैं जब आप परम आनन्द और समरसता की अवस्था में होते हैं।
What generally happens is that love is not what is important but the other, the object of love becomes important; the one to whom love is given becomes important and not love itself. Then the object of love, for various reasons, either biological, verbal or because of a desire for gratification, for comfort and so on, becomes important and love recedes. Then possession, jealousy and demands create conflict and love recedes further and further; the further it recedes, the more the problem of relationship loses its significance, its worth and its meaning. Therefore, love is one of the most difficult things to comprehend. It cannot come through an intellectual urgency, it cannot be manufactured by various methods and means and disciplines. It is a state of being when the activities of the self have ceased; but they will not cease if you merely suppress them, shun them or discipline them. You must understand the activities of the self in all the different layers of consciousness. We have moments when we do love, when there is no thought, no motive, but those moments are very rare.	सामान्य तौर पर होता यह है कि जब हम प्रेम करते हैं तो वहां प्रेम नहीं होता बल्कि वहां प्रेम की जाने वाली वस्तु होती है; मतलब यह कि वहां जिससे हम प्रेम कर रहे हैं वही हमारे लिए सब–कुछ हो जाता है, और स्वयं प्रेम की भूमिका समाप्त हो जाती है, उसकी अहमीयत ही खो जाती है बची रह जाती है वह वस्तु जिससे कथित रूप से हम प्रेम कर रहे होते हैं। ऐसे में प्रेम कहां बचता है, वह बहुत पीछे छूट जाता है आगे रह जाती हैं हमारी आकांक्षाएं, वासनाएं, और स्वामित्व की बेशुमार मांगें। इन सबकी मौजूदगी में प्रेम मुरझाने लगता है और सम्बन्ध अपना अर्थ खो बैठते हैं। इसीलिए प्रेम एक ऐसी चीज है जिसे समझना बहुत ही मुश्किल हैं। प्रेम कोई बौद्धिक दायरे की चीज नहीं है, दिमागी तौर तरीकों के जरिए हम इसे हासिल नहीं कर सकते। यह एक ऐसी अवस्था है जहां स्वार्थ की गतिविधियां अपने–आप तिरोहित होने लगती हैं ओर ‘‘मैं’’ जैसी कोई चीज़ वहां नहीं रह जाती हैं। किन्तु यहां एक बात ध्यान रखने की है कि स्व की गतिविधियों का अंत उनके दमन, नियन्त्रण या उनसे बच निकलने से नहीं होता, बल्कि अपने चेतन मन में उनकी बारीक–से–बारीक हरकत को देखते

Because they are rare we cling to them in memory and thus create a barrier between living reality and the action of our daily existence.	रहने और उनके प्रति सचेत रहने से होता हैं। ऐसे क्षण आते हैं जब हम निष्प्रयोजन होकर बिना किसी हेतु और विचार के बरबस ही प्रेममय हो जाते हैं, किन्तु ऐसे क्षण बहुत ही बिरले होते हैं और इसीलिए हम इन्हें अपनी स्मृति में संजोये रखते हैं, और इन्हें फिर-फिर हासिलकर जी लेने की अभीप्सा से भरे रहते हैं, और इसी के चलते हम वास्तविकता के साथ द्वंद्व की भूमिका में आ जाते हैं।
In order to understand relationship it is important to understand first of all what is, what is actually taking place in our lives, in all the different subtle forms; and also what relationship actually means. Relationship is self-revelation. it is because we do not want to be revealed to ourselves that we hide in comfort, and then relationship loses its extraordinary depth, significance and beauty. There can be true relationship only when there is love but love is not the search for gratification. Love exists only when there is self-forgetfulness, when there is complete communion, not between one or two, but communion with the highest; and that can only take place when the self is forgotten.	सम्बन्ध के गहरे अर्थ को समझने के लिए पहले यह समझ लेना बहुत ज़रूरी है कि हमारा वर्तमान क्या है, सामने मौजूद हमारी वास्तविकता क्या है, बारीकी तौर पर हमारी जिन्दगी में क्या चल रहा हैं। सम्बन्ध का वास्तव में क्या अर्थ है, यह समझने के लिए अपने को खोलकर अपने-ही सामने रखना होगा, किन्तु ऐसा करने से हम डरते हैं और इसीलिए खुद को सुख-सुविधाओं की आड़ में छुपाए रखते हैं। वास्तव में सम्बन्ध खुद को खोलने की ही प्रक्रिया है, इसके बिना सम्बन्ध अपनी गहराई और सुन्दरता को खो देते हैं और अर्थहीन हो जाते हैं। सम्बन्ध वास्तव में तभी होता है जब प्रेम होता हैं। और प्रेम कब होता हैं? तभी जब आत्मतुष्टि और स्वहित की सारी तलाश बंद हो जाती है, और जब पूर्ण आत्म-विस्मरण और निपट एकलयता होती हैं। केवल तभी प्रेम घटित होता हैं।
	प्रश्नोतर, अध्याय ६
****	'द फर्स्ट एण्ड द लास्ट फ्रीडम'
	अनुवाद : मुकेश,
	सम्बन्ध का क्या अर्थ है
What is relationship? Relationship to the earth, to all the beauty of the world, to nature and to other human beings and to one's wife, husband, girl friend, boy friend and so on: what is that bondage, what is that thing about which we say, `I am related'? Please investigate this together. Don't, please, rely on the description the speaker is indulging in. Let's look at it closely.	रिश्ता क्या होता हैं? धरती से और उसकी खूबसूरती से, कुदरत से और दूसरे इंसानों से हमारा क्या रिश्ता हैं? अपनी पत्नी या अपने पति से, अपने महिला या पुरुष मित्रों से हमारा क्या रिश्ता हैं? जिसे हम किसी से 'जुड़ना' कहते हैं वह कौन सा बंधन हैं? आइए मिलकर पता लगाएं। आपसे गुजारिश है कि वक्ता जो कुछ कह रहा है उसे आप एक बैसाखी न बना लें। बल्कि साथ मिलकर बहुत पास आकर चीजों को देखें।

What is relationship? When there is no relationship we feel so lonely, depressed, anxious - you know, the whole series of movements hidden in the structure of self-interest. What is relationship? When you say, `My wife', `My husband', what does it mean? When you are related to God, if there is a God, what does it mean? That word relationship is very important to understand. I am related to my wife, to my children, to my family. Let's begin there. That is the core of all society, the family. In the Asiatic world especially, family means a great deal; it is tremendously important to them - the son, the nephew, the grandmother, grandfather. It is the centre on which all society is based. So when one says, `My wife', `my girl', `my friend', what does that mean? Most of you are probably married, or have a girl friend or a boy friend. What does it mean to be related to them? What are you related to?	रिश्ता किसे कहते हैं? हमारी जिन्दगी में जब रिश्ता नाता नहीं होता तो हम खुद को तन्हा, बुझा-हुआ, और बेचैन महसूस करते हैं। आपको तो पता ही है यह सारा चक्कर जो स्वार्थ के इर्द-गिर्द घूमता हैं। रिश्ता होता क्या है? 'मेरी पत्नी' या 'मेरा पति' जब आप कहते हैं तो इसका क्या मतलब होता हैं? जब आप खुद को परमेश्वर से जोड़कर देखते हैं तो उसका क्या अर्थ होता है? रिश्ता नाम के इस शब्द को समझना बहुत जरूरी हैं। मैं अपनी पत्नी, बच्चे और अपने परिवार से जुड़ा हुआ हूं हम यही से शुरू करते हैं। समाज की बुनियाद में हमारा परिवार हैं। खासकर पूर्वी देशों में परिवार का मतलब बहुत-कुछ होता है, उनके लिए इसकी अहमियत बहुत ज्यादा होती है इसमें दादा-दादी, बहू-बेटे, नाती-पोते सब शामिल होते हैं। परिवार की धुरी पर ही सारा समाज टिका होता हैं। तो जब कोई कहता है 'मेरी पत्नी', 'मेरी लड़की', 'मेरा दोस्त' तो इसका क्या अर्थ होता है? आपमें से ज्यादातर शादी-शुदा होगे या आप किसी महिला और पुरुष मित्र से जुड़े होंगे। उनसे जुड़े होने से आप क्या अर्थ लेते हैं? आप किस चीज से जुड़े हुए हैं?
Let's move away for a moment from the wife and husband. When you follow somebody, a guru, a prophet, a politician, the speaker, or some other person, what is it you are following, what is it that you are surrendering, giving up? Is it the image that you have created about the speaker or the guru, or the image you have in your brain that it is the right thing to do and therefore you will follow him? Is it the image, the picture, the symbol, that you have built and that you are following, not the person, not what he is saying? The speaker has been talking for the last seventy years. I am sorry for him! And unfortunately he has established some reputation, with the books and all that business, so you have naturally created an image about him and you are following that; not what the teaching says. The teaching says, `Don't follow anybody.' But you have built the image, and you are following that which you desire, which satisfies you, which is of tremendous self-	चलिए थोड़ी देर के लिए पति और पत्नी को छोड़ देते हैं। जब आप किसी गुरु, मसीहा, राजनेता या इस वक्ता के ही पीछे चलते हैं तो वास्तव में वह कौन सी चीज होती है जिसके कारण आप उनके पीछे हो लेते है, उनके आगे समर्पित हो जाते हैं। क्या यह उनकी छवि या तस्वीर है जिसको आपने अपने ज़ेह्न में बसा लिया है या आपके दिमाग ने ऐसा ख्याल पैदा कर लिया है कि उन लोगों के पीछे चलना ही सबसे सही और फायदेमंद हैं। कहीं ऐसा ही तो नहीं है कि आप वास्तव में जिसके पीछे चल रहे हैं वह उन लोगों से जुड़ी छवियां है, न कि वे खुद या उनके कहे शब्द। इस वक्ता को बोलते हुए सत्तर साल बीत गये। मुझे उसके लिए दुख हैं! और दुर्भाग्य से उसका कुछ नाम भी फैला हुआ है, किताबों वगैरा के कारण, तब तो सम्भव है कि आपने उसके बारे में भी कोई छवि बना ली हो और आप उसी के पीछे चल रहे हों, आपको इससे मतलब नहीं हो कि शिक्षा क्या कहती हैं। जबकि शिक्षा कहती है किसी के भी पीछे मत चलिए। लेकिन फिर भी

interest - right?	आप अपने मन-मुताबिक छवि बना लेते हैं और आप उस चीज के पीछे चलते जाते हैं जिसकी आपने आकांक्षा की है और जो आपको सन्तुष्टि देती है इस तरह यहां आपका बड़ा भारी स्वार्थ हैं। ठीक है न?
Now let's come back to the wife and husband. When you say, `My wife', what do you mean by that word, what is the content of that word, what is behind the word? Look at it. Is it all the memories, the sensations, pleasure, pain, anxiety, jealousy - is all that embodied in the word wife or husband? The husband is ambitious, wants to achieve a better position, more money, and the wife not only remains at home but has her own ambitions, her own desires. So there they are. They may get into bed together, but the two are separate all the time. Let's be simple with these facts, and honest. There is always conflict. One may not be aware of it and say, `Oh, no, we have no conflict between us', but scrape that a little bit with a heavy shovel, or with a scalpel, and you will find that the root of all this is self-interest. And there may be self-interest in the professionals. Of course there is - doctors, scientists, philosophers, priests, the whole thing is desire for fulfilment. We are not exaggerating, we are simply stating `what is', not trying to cover it up, not trying to get beyond it: there it is. That is the seed in which we are born, and that seed goes on flowering, growing till we die. And when we try to control self-interest, that very control is another form of self-interest. How cleverly self-interest operates. And it also hides behind austerity.	अब चलिए वापस पति-पत्नी के रिश्ते पर आते हैं। जब आप कहते है 'मेरी पत्नी', तो इससे आपका क्या मतलब होता हैं? इस शब्द में क्या छुपा होता है, इसके पीछे का भाव क्या होता है? ध्यान से देखिए इसे। जब आप पति-पत्नी जैसे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं तो इनके साथ क्या वे सारी बीती यादें नहीं काम कर रही होतीं जब आप तमाम तरह के अनुभवों से होकर गुजरे थे सुख-दुख, पीड़ा-बेचैनी, ईर्ष्या-जलन, उत्तजना इत्यादि सब कुछ से। उन दोनों के बीच क्या रिश्ता है? दोनों ही महत्वाकांक्षी है पति बाहर पद-प्रतिष्ठा के पीछे दौड़ रहा है और पत्नी घर के भीतर अपनी चाहतों के सपने संजो रही हैं। तो हकीकत में ये दोनों कहां खड़े है? विस्तर में दोनों साथ-साथ भले ही सो जायें, लेकिन बाकी सारे समय दोनों अलग-अलग हैं। कम-से-कम इन तथ्यों के मामले में तो हम साफ और ईमानदार हो जाएं। दोनों के बीच सहजता है ही नहीं, दोनों हमेशा जद्योजहद में उलझे हैं। हो सकता है हमें इसका आभास न हो और हम यह कहते फिरें कि हमारे बीच तो कोई टकराव नहीं हैं। लेकिन ईमानदारी से पर्दे को थोड़ा उठाकर देखें तो पता चलेगा कि वहां तो स्वार्थ के सिवा कुछ है ही नहीं! हमारा सारा दुनियावी कारोबार स्वार्थ की जमीन पर टिका हुआ हैं। कोई भी पेशे को ले लीजिए डाक्टर के, साइंटिस्ट के, फिलॉस्फर के, धर्मगुरु के सारा कारोबार सुख-संतुष्टि की तलाश से प्रेरित हैं। हम यहां चीजों को बढ़ा चढ़ाकर नहीं बोल रहे है बल्कि ज्यों का त्यों जो सामने मौजूद है उसे देख रहे हैं। स्वार्थ की उपजाऊ ज़मीन पर हम पैदा होते हैं और मौत आने तलक उसी पर खेलते-बढ़ते हैं हम किस कदर स्वार्थ के वशीभूत हैं यह इसी से पता चलता है कि जब हम स्वार्थ पर काबू पाने की कोशिश करते हैं तो हमारी यह कोशिश भी स्वार्थ से प्रेरित होती हैं।
Last Talks at Saanen 1985 4th Public Talk Wednesday, 17th July, 1985	अन्तिम डायरी से : जे. कृष्णामूर्ति १७ जुलाई सानेन, १९८५

	अनुवाद : मुकेश
	प्रकृति से सम्बन्ध
THERE IS A tree by the river and we have been watching it day after day for several weeks when the sun is about to rise. As the sun rises slowly over the horizon, over the trees, this particular tree becomes all of a sudden golden. All the leaves are bright with life and as you watch it as the hours pass by, that tree whose name does not matter - what matters is that beautiful tree - an extraordinary quality seems to spread all over the land, over the river. And as the sun rises a little higher the leaves begin to flutter, to dance. And each hour seems to give to that tree a different quality. Before the sun rises it has a sombre feeling, quiet, far away, full of dignity. And as the day begins, the leaves with the light on them dance and give it that peculiar feeling that one has of great beauty. By midday its shadow has deepened and you can sit there protected from the sun, never feeling lonely, with the tree as your companion. As you sit there, there is a relationship of deep abiding security and a freedom that only trees can know.	दूर क्षितिज के उस पार से सूरज जब निकलने को होती है तो नदी के किनारे का यह पेड़ सुनहरी आभा से एकाएक चमकने लगता है और सारी पत्तियां नवजीवन से भर उठती हैं और एक अद्‌भुद सुन्दरता इस धरती पर, इस पूरी सरिता पर छाने लगती हैं। इस वृक्ष के नाम का कोई महत्व नहीं, महत्व है तो स्वयं वृक्ष का, उसके सौन्दर्य का। दिन-पर-दिन, सप्ताह-दर-सप्ताह घण्टों बीत जाते हैं इस वृक्ष को निहारते-निहारते। जैसे ही सूरज थोड़ा ऊपर चढ़ता है इसकी पत्तियों में फड़फड़ाहट महसूस होती है, फिर मानो खुशी से वे झूमने लगते हैं। हर बीतता लम्हा इस पेड़ में एक नयी रंगत, एक नयी अनुभूति भरता जाता हैं। सूरज के निकलने से पहले इसकी छवि नीरवता का, गरिमा से भरी प्रशान्ति का अहसास कराती हैं। दिन के निकलने के साथ भोर की किरणों में नहाई इसकी पत्तियां उमगने-थिरकने लगती हैं और निस्सीम सौन्दर्य के अजब अहसास के अन्तस घिरने लगता हैं। दिन चढ़े इसकी छांह गहराने लगती है और आप तपती धूप से बचते हुए अपने इस साथी से दो बातें कर सकते हैं यह आपको कभी अकेलेपन का अहसास नहीं होने देगा। यहां बैठते ही आपको लगेगा कि आप महफूज हो गए और साथ ही मुक्त भी मुक्ति के साथ सुरक्षित होने का यह बोध इन तरुवरों को सहज उपलब्ध हैं।
Towards the evening when the western skies are lit up by the setting sun, the tree gradually becomes sombre, dark, closing in on itself. The sky has become red, yellow, green, but the tree remains quiet, hidden, and is resting for the night.	सांझ-ढले जब पच्छिम का आसमान डूबते सूरज की रौशनी में सुलगने लगता है तब यह पेड़ गुमसुम, उदास-सा अपने मे सिमटने लगता हैं। आसमान लाल, पीले, हरे रंगों मे घुल जाता है जबकि यह पेड़ चुपचाप अपने को छिपाए रातभर सुस्ताने के लिए तैयार हो जाता हैं।
If you establish a relationship with it then you have relationship with mankind. You are responsible then for that tree and for the trees of the world. But if you have no relationship with the living things on this earth you may lose whatever relationship you have with humanity, with human	यदि आप इस पेड़ से नाता जोड़ते हैं तो आप पूरी मनुष्य जाति से जुड़ जाते हैं। तब आप पर इस पेड़ की ही नहीं दुनियाभर के पेड़ों की जिम्मेदारी आ जाती हैं। धरती की इन जीती-जागती चीजों से यदि आपका नाता नहीं है तो इंसान और इंसानियत से भी आपका नाता नहीं हैं। हम उन पेड़ों के वजूद में गहराई

beings. We never look deeply into the quality of a tree; we never really touch it, feel its solidity, its rough bark, and hear the sound that is part of the tree. Not the sound of wind through the leaves, not the breeze of a morning that flutters the leaves, but its own sound, the sound of the trunk and the silent sound of the roots. You must be extraordinarily sensitive to hear the sound. This sound is not the noise of the world, not the noise of the chattering of the mind, not the vulgarity of human quarrels and human warfare but sound as part of the universe.	से कभी नहीं झांकते, हम उन्हें वास्तव में कभी छूकर नहीं देखते; उनकी सघनता, उनकी रूखी त्वचा को कभी महसूस नहीं करते; हम उनकी आवाज तक नहीं सुनते पत्तियों के बीच बहती और उन्हें हिलाती हवा की आवाज नहीं, बल्कि खुद उन पेड़ों की आवाज, उनके तनों की, उनकी निश्चल जड़ों की आवाज यह सब सुनने के लिए आपको असाधारण रूप से कोमलमनस्क होना होगा। यह आवाज दुनिया के कोलाहल, मन के शोरगुल से दूर की आवाज है, यह मनुष्य की बर्बरता, उसके लड़ाई-झकड़ों और युद्धों की आवाज़ नहीं है, बल्कि यह एक आवाज है जो असीम ब्रह्माण्ड के अस्तितव का हिस्सा हैं।
It is odd that we have so little relationship with nature, with the insects and the leaping frog and the owl that hoots among the hills calling for its mate. We never seem to have a feeling for all living things on the earth. If we could establish a deep abiding relationship with nature we would never kill an animal for our appetite, we would never harm, vivisect, a monkey, a dog, a guinea pig for our benefit. We would find other ways to heal our wounds, heal our bodies. But the healing of the mind is something totally different. That healing gradually takes place if you are with nature, with that orange on the tree, and the blade of grass that pushes through the cement, and the hills covered, hidden, by the clouds.	यह बड़ी अजीब बात है कि कुदरत के साथ हमारा कितना थोड़ा रिश्ता है, उन कीट-पतंगों, मेढ़कों, और अपने जोड़े को आवाज देते उस उल्लू से हम कहां जुड़े है? धरती की जितनी जीवन्त चीजें हैं उन सबसे हमारी भावनाएं कहां जुड़ी है? यदि प्रकृति से हमारा गहरा रिश्ता हो तो अपनी भूख के लिए हम किसी प्राणी की बलि नहीं चढ़ाएंगे, अपने लाभ के लिए हम किसी बंदर, कुत्ते या गिनी-पिग का इस्तेमाल नहीं करेंगे। भले-ही अपने घावों को भरने के लिए, अपने शरीर को बचाने के लिए हम और उपाय खोज निकालेंगे। हमारे मानस को निरोग रखने का पूरा इन्तिजाम प्रकृति के पास हैं। जैसे-जैसे हम प्रकृति से, पेड़ पर लगी उस नारंगी से, दीवार में उगी उस घास से और बादलों से घिरी-छुपी उन पहाडियों से घुलते-मिलते जाते हैं, हमारा मानस-अन्तस भी निरोग होता जाता हैं।
This is not sentiment or romantic imagination but a reality of a relationship with everything that lives and moves on the earth. Man has killed millions of whales and is still killing them. All that we derive from their slaughter can be had through other means. But apparently man loves to kill things, the fleeting deer, the marvellous gazelle and the great elephant. We love to kill each other. This killing of other human beings has never stopped throughout the history of man's life on this earth. If we could, and we must, establish a deep long	यह कोई जज़्बाती या रूमानी उड़ान नहीं है बल्कि सच्चाई है उस रिश्ते की हकीकत है जो धरती की हर चीज के साथ है मनुष्य ने लाखों व्हेल मछलियों की जान ली है और अब भी ले रहा हैं। इनकी जान की कीमत पर हम जो कुछ भी हासिल करते हैं उसे किन्ही और तरीकों से भी हासिल कर सकते हैं। पर साफ लगता है कि जान लेना इंसान की फितरत का हिस्सा बन गया है उसे कुलांचे भरते उस प्यारे हिरन को, उस अद्भुद बारहसिंघे (गजेल) और उस शानदार हाथी को मारने में कोई दर्द महसूस नहीं होता। एक-दूसरे की जान लेने

abiding relationship with nature, with the actual trees, the bushes, the flowers, the grass and the fast moving clouds, then we would never slaughter another human being for any reason whatsoever. Organized murder is war, and though we demonstrate against a particular war, the nuclear, or any other kind of war, we have never demonstrated against war. We have never said that to kill another human being is the greatest sin on earth.	तक में हमें मजा आता हैं! धरती पर जबसे इंसानी बजूद है तबसे मारकाट कभी नहीं थमी हैं। यदि ऐसा हो सके, और ऐसा होना ही चाहिए, यदि हमारा गहरा और मजबूत रिश्ता प्रकृति से, उसके पेड़-पौधों, झाड़ियों, फूलों, घास के तिनकों और उमड़ते-घुमड़ते बादलों से कायम हो सके, तो हम किसी भी कीमत पर, किसी भी सूरत में किसी भी इंसान की हत्या नहीं करेंगे। युद्ध सुनियोजित हत्याकाण्ड हैं। हम एटमया किसी खास युद्ध के खिलाफ तो आवाज उठाते हैं लेकिन यह सवाल कभी नहीं करते कि युद्ध होते ही क्यों हैं। हमने यह कभी नहीं कहा कि किसी दूसरे इन्सान को मारना धरती पर सबसे बड़ा गुनाह हैं।
	'कृष्णमूर्ति टु हिमसेल्फ' ओहाय, २५ फरवरी १९८३
***	अनुवाद : मुकेश,
	पत्र : जे. कृष्णामूर्ति **मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता**
What we are the world is. In the family, in society, we have made this world with its brutality, cruelty and coarseness, its vulgarity and destruction of each other. We also destroy each other psychologically, exploiting one another for our desires and gratifications. We never seem to realize, unless each one of us undergoes a radical change, that the world will continue as it has for thousands of years, maiming each other, killing each other and despoiling the earth. If our house is not in order we cannot possibly expect society and our relationships to one another to be in order. It is all so obvious that we neglect it. We discard it as being not only simple but too arduous, so we accept things as they are, fall into the habit of acceptance and carry on. This is the essence of mediocrity. One may have a literary gift, recognised by the few, and work towards popularity; one may be a painter, a poet or a great musician, but in our daily lives we are not concerned with the whole of existence. We may perhaps be adding to the great confusion and misery of man. Each one wants to express his own little talent and be	हम जैसे हैं वैसा-ही यह संसार हैं। अपने परिवार में, समाज में हम जिस तरह रहते हैं वैसा-ही यह संसार हमने बना दिया है, जहां बर्बरता, क्रूरता, पाशविकता, असभ्यता और एक-दूसरे का विनाश, सब कुछ हैं। यहां हम अपनी इच्छाओं, वासनाओं और स्वहित के लिए एक-दूसरे का शोषण करने और अंत करने से भी नहीं हिचकते। यह सब केवल जाहिरी तौर पर नहीं चलता बल्कि अन्दर-ही-अन्दर, मनोवैज्ञानिक तौर पर भी चलता रहता हैं। और यह तय है जब तक हमारे भीतर बुनियादी बदलाव नहीं आता, तब तक यह मारकाट, खूनखराबा और विध्वंस ऐसे-ही हजारों-हजार साल तक चलता रहेगा। जब हमारा खुद का घर ही कायदे से और ठीक-ठाक नहीं होगा तो हमारा समाज और हमारे आपसी रिश्ते भी कहां से ठीक होंगे? यह इतनी सीधी-सी बात है कि हम इसकी ओर ध्यान ही नहीं देते। यह सीधी-सी बात ही हमें बहुत मुश्किल लगती है और हम चीजों को जस-का-तस स्वीकारते जाते हैं, कभी सवाल नहीं करते, उन्हें यूंही ढोते जाते हैं। यही कारण है कि हम एक औसत दर्जे के मामूली इंसान बने रहते हैं जिनमें परिवर्तन की कोई वास्तविक चाह नहीं होती,

satisfied with it, forgetting or neglecting the whole complexity of man's trouble and sorrow. This again we accept and this has become the normal way of life. We are never an outsider and remain outside. We feel ourselves incapable of remaining outside or are afraid not to be in the current of the commonplace.	जिन्हें अपने आस-पास के समुचे जीवन से कोई सरोकार नहीं होता अब अगर हम कोई महान कवि, चित्रकार, संगीतकार या साहित्यकार हो, हमारा नाम हो तो उस सबका क्या मतलब रह जाता है? हमारा समाज तो वहीं-का-वहीं रहता हैं। हो सकता है इस तरह हम समाज की दुर्दशा और दुर्गति में और मदद ही कर रहे हों। क्योंकि हम सभी अपनी छोटी-मोटी प्रतिभा को जगजाहिर करना चाहते हैं, हमें सिर्फ अपने-आप से, अपनी नेकनामी से मतलब है और इस तरह हम अपनी धुन में बाकी सबको नकार देते हैं, इंसानी वजूद की पीड़ाओं, दुख-कष्टों से अपना नाता तोड़ लेते हैं। खुद को हटकर, अलग देचाने की चाह हमें आम दुनिया से बाहर करती है, जबकि हकीकत यह है कि हम दुनिया से बाहर कभी नहीं होते।
As parents and educators, we make the family and the school of what we are. Mediocrity really means going only half-way up the mountain and never reaching the top. We want to be like everybody else and of course if we want to be slightly different we keep it carefully hidden. We are not talking of eccentricity: that is another form of self-expression, which is what everyone is doing in his own little way. Eccentricity is tolerated only if you are well-to-do or gifted, but if you are poor and act peculiarly you are snubbed and ignored. But few of us are talented; we are workers carrying on with our particular profession.	इसी तरह, माता-पिता और शिक्षक जैसे होंगे वैसा-ही उनका घर परिवार और विद्यालय होगा। मामूली और औसत दर्जे के लोग वे होते हैं जो आधे-रास्ते में ही रुक जाते है कभी पहाड़ी की चोटी तक नहीं पहुंचते। हममें से अधिकतर लोग लीक पर ही चलना चाहते हैं और जो उससे थोड़ा सा भी हटकर चलना चाहता है उससे हम सावधानीपूर्वक बचकर रहते हैं। हम यहां झक्कीपने, दीवानगी या सनक की बात कर रहे है हालांकि अपनी पहचान बनाने और खुदनुमाई का एक तरीका यह भी हैं। फिर भी आपकी सनक और झक्कीपने को समाज तभी बर्दाश्त करेगा जब आप अच्छी-खासी हैसियतवाले अक्लमन्द इंसान होंगे और अगर कहीं आप गरीब हैं, और आपकी हरकतें लीक से हटकर हैं तो आपको मिटा दिया जाएगा, कुचल दिया जाएगा। लेकिन हकीकत में हममें से कुछ ही लोगों के पास सच्ची प्रतिभा होती हैं।
The world is becoming more and more mediocre. Our education, our occupation, our superficial acceptance of traditional religion are making us mediocre and rather sloppy. We are concerned here with our daily life, not with the expression of talent or some capacity. As educators, which includes parents, can we break away from this plodding, mechanical way of living? Is it the unconscious fear of loneliness that	रोज-पर-रोज हमारा छिछलापन-सतहीपन बढ़ता जा रहा हैं। हमारी पढ़ाई-लिखाई, हमारे काम-धन्धे, हमारे रीति-रिवाज और धर्म, हमें औसत दर्जे से ऊपर नहीं उठने देते, लकीर का फकीर ही बनाए रखते हैं। एक तरह से वे हमें निष्प्राण, बेजान और मुर्दा बना देते हैं। हमारा मतलब यहां रोजमर्रा की जिन्दगी से है, प्रतिभाया किसी हुनर के प्रदर्शन भर से नहीं हैं। जिन्दगी के इस घिसे-पिटे ढर्रे को क्या हम,

makes us fall into habits: habit of work, habit of thought, the habit of general acceptance of things as they are? We establish a routine for ourselves and live as closely as possible to that habit, so gradually the brain becomes mechanical and this mechanical way of living is mediocrity. The countries that live on established traditions are generally mediocre. So we are asking ourselves in what way can mechanical mediocrity end and not form another pattern which will gradually become mediocre too?	शिक्षक और माता-पिता मिलकर बदल सकते हैं? क्या यह हमारे भीतर गहरे छुपा अकेलेपन का भय है जो हमें इस घिसे-पिटे ढर्रे से बांधे रखता है और हमें इसका आदी बना देता है? फिर हम एक जिन्दा लाश में तब्दील हो जाते हैं और हमारी हर क्रिया आदत न होती है, सोचना विचारना और चीजों को जस-का-तस स्वीकारनातक। हम तरह-तरह की पावन्दियों में खुद को जकड़ लेते हैं और उसी के मुताबिक भरसक जीने की कोशिश करते हैं इस तरह हमारा दिमाग एक मशीन की तरह हो जाता है जो एक बंधे-बंधाए ढर्रे पर चलती है ऐसी बंधी-बंधाई जिन्दगी औसत दर्जे की होती है, जिसमें कुछ भी नया, जीवन्त और रचनात्मक नहीं होता। पुरानी स्थापित परम्पराओं के अनुसार चलने वाले सारे देश औसत दर्जे के हैं, प्राणविहीन है मरे हुए हैं। इसलिए हम पूछ रहे हैं कि घिसी-पिटी औसत दर्जे की जिन्दगी का यह सिलसिला तरह और कब खत्म होगा?
The mechanical usage of thought is the issue: not how to step out of mediocrity, but how man has given complete importance to thought. All our activities and aspirations, our relationships and longings, are based on thought. Thought is common to all mankind, whether the highly talented or the villager without any kind of education. Thought is common to all of us. It is neither of the East nor of the West, the lowlands or the highlands. It is not yours or mine. This is important to understand. We have made it personal and hence still further limited the nature of thought. Thought is limited but when we make it our own we make it still shallower. When we see the truth of this there will be no competition between the ideal thought and everyday thought. The ideal has become all-important and not the thought of action. It is this division which breeds conflict, and to accept conflict is mediocre. It is the politicians and the gurus who nourish and sustain this conflict and so mediocrity.	इंसान ने अपनी सोच को कितनी अहमियत दी है अपनी सारी गतिविधियों, चाहतों, अभिलाषाओं, आकांक्षाओं और अपने रिश्ते-नातों को उसने इसी पर टिका दिया हैं। यह सोच समान रूप से सभी में, धरती के हर इंसान में चाहे वह बेहद पढ़ा-लिखा हो या गंवार काम कर रही है। सोच विचार की प्रक्रिया न तो पूरब की होती है, न पश्चिम की; न गरीब की होती है, न अमीर की; न मेरी होती है और न तुम्हारी बल्कि एक सिलसिलेके रूप में सबमें एक-समान होती हैं। इसे समझना बेहद जरूरी हैं। हमने विचार को व्यक्ति-विशेष से जोड़कर उसके दायरे को बहुत अधिक संकुचित और संकीर्ण कर दिया हैं। यह सही है कि विचार बुनियादी तौर पर संकुचित और सीमित होता है, लेकिन जब हम इसपर अपना हक जताने लगते हैं तो यह और ज्यादा सतही हो जाता हैं। विचार की बुनियादी सचाई को देख लेने के बाद उस प्रतिस्पर्धाओं का अन्त हो जाता है जो एक आदर्शवादी सोच और रोजमर्रा की सोच के बीच छिड़ी रहती हैं। आदर्श ही जब हमारे लिए सब-कुछ हो जाता है और रोजमर्रा की जिन्दगी हाशिए पर चली जाती है तो अलगाव (विभाजन) पैदा होता है जो द्वंद्व और संघर्ष के बीच बोता है और इस जद्योजहद और संघर्ष को सिर्फ एक औसत दर्जे का इंसान

	ही स्वीकार करता हैं। सियासी लीडर और गुरुडम के तख्त पर बैठे लोग जद्योजहद को खाद–पानी देते हैं जिससे यह हमेशा कायम रहे और इस तरह वे लोगों को औसत दर्जे से ऊपर उठता हुआ कभी नहीं देखना चाहते।
Again we come to the basic issue: what is the response of the teacher and the parent, which includes all of us, to the coming generation? We may perceive the logic and the sanity of what is said in these letters, but the intellectual comprehension of it does not seem to give us the vital energy to propel us out of our mediocrity. What is that energy which will make us move now, not eventually, out of the commonplace? Surely it is not enthusiasm or the sentimental grasp of some vague perception, but an energy that sustains itself under all circumstances. What is that energy which must be independent of all outside influence? This is a serious question each is asking himself: is there such energy, totally free from all causation?	हम फिर बुनियादी मुद्दे पर आते हैं : आगे वाली पीढ़ी के लिए शिक्षकों और अभिभावकों की जवाब देही क्या है? इन पत्रों में जो कुछ कहा जा रहा है उसकी तर्कपूर्णता और समझदारी को, हो सकता है, आप ग्रहण भी कर लें, लेकिन सिर्फ दिमागी समझ से तो काम नही चलेगा इससे, मुमकिन है, वह प्राण शक्ति न मिले जो आपको औसत दर्जे की गैररचनात्मक जिन्दगी से बाहर निकाल सके। वह कौन–सी जीवन्त ऊर्जा है जो आपको अभी, विल्कुल अभी (अंततोगत्वा या आखिर में नहीं) सृजन से विहीन ज़िन्दगी से बाहर निकाल लाएगी? यह तो तय है कि यहां सतही अधीरता और भावनात्मक उत्साह से काम नहीं चलेगा, बल्कि यहां तो एक ऐसी ऊर्जा शक्ति काम करेगी जो अपनी लौ को हरदम, हमर परिस्थिति में, कैसे भी हालात हों, जलाए रखेगी। वह कौन सी ऊर्जा है जो अपने को हर बाहरी प्रभाव और दबाव से अछूता और बेअसर रखती है? अपने–आप से किया जाने वाला यह बहुत ही संजीदा सवाल हैं।
Now let us examine it together. Dimension has always an end. Thought is the outcome of cause which is knowledge. That which has a dimension has an end. When we say we understand, it generally means an intellectual or verbal comprehension, but comprehending is to perceive sensitively that which is, and that very perception is the withering away of what is. Perception is this attention that is focussing all energy to watch the movement of that which is. This energy of perception has no cause, as intelligence and love have no cause.	अब हमें इसकी मिलकर जांच–पड़ताल करनी चाहिए। हम यह जानते हैं कि हर आयाम की एक सीमा होती है और उस सीमा को एक बिन्दु पर जाकर खत्म होना ही पड़ता हैं। इसका अर्थ है कि जो भी चीज आयाम के घेरे में आती है उसका एक अंत हैं। जिसे हम जानकारी या 'नौलिज' कहते हैं वह विचार में से उपजता है और विचार स्वयं किसी कारण में से निकलता हैं। जब हम कहते हैं कि हमने इसे समझ लिया तो इसका आमतौर पर मतलब होता है कि दिमागी तौर पर, जो कहा जा रहा है उसके मायने को समझ लिया लेकिन यह बुनियादी तौर पर समझना नहीं है; वास्तविक समझ वह होती है जिसमें हम अंतर्मन की गहराई से जो सामने मौजूद है उसको देखते और महसूस करते हैं; यहां हम अपनी सारी ताकत, सारी ऊर्जा जो कुछ भी सामने है उसे सिर्फ देखने में लगा देते हैं। इस देखने और

	महसूस करने में सारे भ्रम मिटने लगते हैं, जो सामने मौजूद है उसका वजूद मिटने लगता हैं। बिना रोक-टोक के सीधे देखने की यह जो ऊर्जा-शक्ति है उसके पीछे कोई कारण काम नहीं करता उसी प्रकार जैसे प्रज्ञा (अंतर्ज्ञान) और प्रेम के पीछे कोई कारण नहीं होता।
	'लेटर्स टु द स्कूल्स', दूसरा भाग, १५ अक्टूबर १९८३
	अनुवाद : मुकेश